Exh. 3.3.3 2018-19.
5 Publications in Skt
3.3.3(1)

ISSN : 2347-4041

UGC Approved No. 41232
Impact Factor 3.245

संस्कार चेतना अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित शोध पत्रिका

वर्ष 8, अंक 6, फरवरी 2019

श्रीमद्भगवद्गीता एवं शिक्षानीति

डॉ० विदुषा
राजकीय महिला महाविद्यालय
करनाल (हरियाणा)

जगद्गुरु भगवान् श्रीकृष्ण का प्राणिमात्र को अमूल्य उपहार है श्रीमद्भगवद्गीता। मानव के जीवन को सर्वथा निर्मल एवं निर्दोष बनाकर जगत्स्रष्टा के समकक्ष खड़ा कर अद्वैतानुभूति का रसपान करवाने वाली अद्भुत गङ्गा है गीता। वैदिक परम्परा के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को जीवन में पुरुषार्थचतुष्टय की सिद्धि करनी है। प्रत्येक जीवधारी अपने प्रत्येक कर्म के परिणामस्वरूप अन्ततः परमानन्द को ही प्राप्त करना चाहता है। गीता मनुष्य को कर्म करने में आनन्द लेना सिखाती है। क्योंकि सत्कर्म के बदले सत्परिणाम एवं दुष्कर्म के बदले दुष्फल अवश्यम्भावी है। अतः कौन सा कर्म करने योग्य है इसका निर्णय करने की पद्धति सिखाती है गीता।[1] श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार प्राणिमात्र ईश्वर का ही अंश है[2] तथा अंश अन्ततः अपने अंशी में मिलकर ही चरमानन्द को उपलब्ध करता है। उस दिव्य एवं चरमानन्द की उपलब्धि हेतु गीता ज्ञान-कर्म एवं भक्ति के समन्वय को माध्यम मानती है इसे ही ईशोपनिषद् में इसे ही विद्या एवं अविद्या का समन्वय कहा है।[3] पाणिनीय धातुपाठ के अनुसार √ शिक्ष्[4] एवं √विद्[5] दोनों ही धातु विद्याधिगम के अर्थ में समानार्थक है। जीवन के परमोद्देश्य अर्थात् शाश्वदानन्द की उपलब्धि के निमित्त सत्यासत्य का सम्यग् बोध कराकर समुचित अवसर पर समुचित कर्म का बोध कराने वाले ज्ञान के साथ साथ विवेक की आवश्यकता होती है। इतिहास साक्षी है कि सर्वत्र गुण एवं ज्ञान ने ही सम्मान पाया है। मूर्खता एवं क्रियाहीनता अपकृष्टता के लक्षण है। अतः स्वाभिमानपूर्ण एवं उद्देश्यपूर्ण जीवन हेतु शिक्षा अनिवार्य है। शिक्षा की यथार्थ सार्थकता निष्क्रिय ज्ञान को उपलब्ध कर लेना मात्र नहीं है प्रत्युत यथावसर लोकहितार्थ आचरण में लाने से है। यक्ष ने राजा युधिष्ठिर से पूछा **"कः पन्था"** अर्थात् जीवन के लिए समुचित मार्ग कौन सा है? युधिष्ठिर का प्रत्युत्तर है -

**"तर्कोऽप्रतिष्ठः श्रुतयः विभिन्नाः नासौ ऋषिर्यस्य मतं प्रमाणम्।
धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां महाजनो येन गतः स पन्था ॥"[6]**

योगेश्वर श्रीकृष्ण का गौरव केवल ज्ञानी होने में नहीं प्रत्युत विवेकपूर्ण कर्म करने में है। महाभारत युद्ध में पितामह भीष्म, आचार्य द्रोण, आचार्य कृप, सूर्यपुत्र कर्ण जैसे महान् योद्धा जिस पक्ष में थे उस सेना को परास्त करना श्रीकृष्ण जैसे अद्भुत विवेकी का ही कर्म था। भीष्म द्रोण एवं कर्ण जैसे योद्धाओं को रणभूमि से हटाना, द्रौपदी को भीष्म से अखण्ड सौभाग्यवती होने का आशीर्वाद दिलाकर पृथ्वी को निष्पाण्डव बना देने की भीष्मप्रतिज्ञा से पाण्डवों की प्राणरक्षा, अश्वत्थामा द्वारा पाण्डवसेना पर सन्धान किए गए वैष्णवास्त्र में पाण्डवसेना की रक्षा, भीम-दुर्योधन के निर्णायक युद्ध में सहायता, अश्वत्थामा के ब्रह्मास्त्र से उत्तरा के गर्भ की रक्षा श्रीकृष्ण के द्वारा ही हुई। जिससे अन्ततः धर्म-नीति एवं न्याय के पक्ष की विजय समस्त विश्व के लिए धर्म का आश्रय बने।

श्रीकृष्ण ने अपने समग्र जीवन में जो आचरण कर आचरण की मर्यादा का आदर्श उपस्थापित किया उसे ही उपदेश रूप में कुरुक्षेत्र रणभूमि के अर्जुन को निमित्त बनाकर हम सबके समक्ष रखा। इसी बात में गीता की विशिष्ट महत्ता है कि इसके उपदेष्टा स्वयं प्रायोगिक पुरुष अथवा प्रैक्टिकल मैन है।

Scanned with CamScanner